डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना, मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–07 अप्रैल, 2020)

शिक्षा और भाषा क्यों जरूरी है ?

षिक्षा का भाषा से अंतरंग संबंध है। षिक्षा ज्ञान का पर्याय है तो भाषा उस ज्ञान को पाने का एक सषक्त माध्यम है। बिना भाषा के हम ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते और बिना ज्ञान के भाषा अधूरी है। भाषा वह मौलिक आधार है, जिसके द्वारा हम न केवल अपने भावों, विचारों और संवेदनाओं का आदान प्रदान करते हैं बल्कि सामाजिक परिवर्तन और विकास को भी चिन्हित करते हैं। इसलिए भाषा मानव जाति के लिए एक जरूरी ज्ञानात्मक यादृच्छिक प्रतीक है जिसके माध्यम से हम सभी जिन्दगी जीने के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन और विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भागीदारी प्रस्तुत करते हैं।

षिक्षा भाषा के माध्यम से सीखी जाती है। भाषा की निजता हमें अपनी राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़कर रखती है और सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता के विकास का मार्ग प्रषस्त करती है। इसी से भारतेन्दु हरिष्चन्द्र ने निज भाषा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।'' भारतेन्दु के कथन से स्पष्ट होता है कि भाषा की निजता कितना आवष्यक है ? क्या हम षिक्षा ग्रहण करने के साथ अपनी भाषा को याद करते हैं ? या अपनी भाषा में षिक्षा ग्रहण करते हुए देष की अस्मिता महसूस करते हैं ? दिखने में यह सवाल बकवास लगता है, किन्तु इसपर गंभीरतापूर्वक विचार करने पर लगता है कि कहीं न कहीं हम अपनी भाषा से दूर होते चले जा रहे हैं। अपनी शषा से दूरी राष्ट्रीयता के संकट का लक्षण है।

वर्तमान वैष्विक सन्दर्भ में अन्य भाषाओं की जानकारी जितनी आवष्यक है, उससे कहीं अधिक अपनी भाषा से प्रेम करने की जरूरत है। परेषानी तब बढ़ जाती है जब हम देषी और विदेषी भाषा के अधूरेपन के षिकार होते हैं। तब 'न घर के न घाट के' होते हैं। हमारे भीतर की जिन्दादिली इस अधूरेपन के समक्ष मरने लगता है और हम हीन भावना के षिकार हो उठते हैं। अधिकांष ऐसे लोग हैं, जो आधी हिन्दी और आधी अंग्रेजी यानी 'हिंग्लिष' को महत्त्व देते हैं। क्या यह आज के वैष्विक समय की मांग है ? इन सबके बावजूद 'अधूरापन' कहीं न कहीं हमारे मन को सालता है। इसलिए जरूरत है कि हम अपने अध्ययन–अध्यापन में अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करते हुए ज्ञान अर्जित करें और जहां जरूरत है वहां दूसरी भाषाओं को भी हम अपना माध्यम बनाएं। इससे यह फायदा होगा कि आप अपनी भाषा पर अधिकार रखते हुए अन्य भाषाओं का उपयोग कर अपनी सामाजिकता और राष्ट्रीयता को भारतीयता के संस्कार में रंग सकते हैं। 'पिता

जी', 'बाबूजी' या 'मां' षब्द में जो अपनापन है वह हमें भारतीयता के संदर्भों से जोड़ता है, वहीं 'पापा' या 'मम्मी' षब्द एक अजीब कृत्रिमता के भावबोध से जोड़ता है। इस कृत्रिम भावबोध से हमारी संवेदनषीलता खत्म हो जाती है। संवेदनषीलता हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। इसलिए मेरा अनुरोध होगा आप सभी से कि अपनी भाषा से अंतरंगता बनाये रखें। अन्य भाषाओं से केवल ज्ञान अर्जित करने के लिए जुड़ें, उसका हिस्सा बनने के लिए नहीं।

भाषा की कृत्रिमता हमें क्रूर और बर्बर बनाती है। हम यदि अपनेपन के भाव से कुछ सीखते हैं तो सबकुछ अपना जैसा लगता है। अपना जैसा लगना ही भारतीयता और उस संस्कृति से जुड़ना है। समरस होना है। अन्य भाषाओं की संस्कृति के दबाव में षिक्षा ग्रहण करना बेगानेपन की अवस्था से जुड़ना है। यह बिल्कुल घर से बेघर होने जैसा है। देषी भाव और विचार विदेषी बोली में भले प्रभावषाली लगने का अहसास पैदा करता हो, किन्तु उसमें वह रंग और रुआब नहीं होता जो 'हाथ जोड़ने', 'पाँव छूने' और 'गले मिलने' के लिए प्रेरित करता है। धोती–कुर्ता और गमछा में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का होरी जमींदार रायसाहब की तरह भले बाबू न दिखता हो, पर हमारी संवेदना होरी से ही जुड़कर चलती है, राय साहब से नहीं। क्योंकि होरी के वाह्य और आंतरिक चरित्र और संस्कार में पूरी भारतीयता पिरोयी हुई है। हमें हमारी भाषा अंतरंगता के साथ जोड़ती है, जबकि अन्य दूसरी भाषाएं हमें जोड़ने के बजाय अपनों से अलग कर देती है। मतलब अंग्रेजी या अन्य दूसरी भाषाएं ग्रहण अवष्य कीजिए पर अपनी भाषा की बलि चढ़ाकर नहीं। अपनी भाषा की अंतरंगता के साथ अपने मतलब के लिए अन्य भाषाओं को ग्रहण कीजिए तो भारतीयता का रंग राष्ट्रीयता के रंग में सराबोर होकर ज्ञानात्मक संवेदना हमारी संवेदना के अनुरूप होगी। इसका वर्तमान उदाहरण हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी हैं। वे अपनी अस्मिता को देष या विदेष में कभी नहीं त्यागते हैं। वे अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही उपयोग करते हैं और आवष्यकता पड़ने पर अंग्रेजी बोलते हैं। आप उन्हें सिर से पाँव तक देख लें, बाहर से भीतर तक के भावों को गहनता से जाँच ले राष्ट्रीयता और ज्ञान का प्रखर ताप दिखने को मिलता है। उनके द्वारा प्रयुक्त देषी–विदेषी भाषणों, व्याख्यानों, अपनी बात कहने में हिन्दी का परचम निरन्तर लहराता हुआ दिखलाई पड़ता है। हिन्दी उनके व्यक्तित्व की ही नहीं हमारे राष्ट्र के व्यक्तित्व और अस्तित्व की पहचान है।

दिनांक :– 07/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**